



ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class IX

Subject- Hindi Second Language

Topic-

दिये जल उठे



मधुकर उपाध्याय

By- आचार्य सुशील शर्मा





लेखक -

मधुकर
उपाध्याय

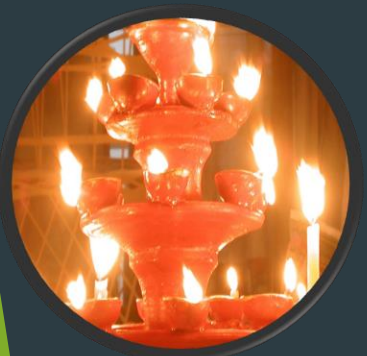
{1956}

मधुकर उपाध्याय ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अयोध्या से प्राप्त की। अवध विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक होने के बाद भारतीय जनसंचार संस्थान, नयी दिल्ली से उन्होंने पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया।

इतिहास और खासतौर पर ब्रितानी शासनकाल में उनकी दिलचस्पी ने उन्हें महात्मा गांधी के चर्चित दांडी मार्च की पुनरावृत्ति के लिए प्रेरित किया और उन्होंने 400 किलोमीटर से अधिक की पैदल यात्रा की। आज़ादी की पचासवीं वर्षगांठ पर उनकी पुस्तक पचास दिन, पचास साल पहले खासी चर्चित रही। उनकी एक अन्य पुस्तक किस्सा पांडे सीताराम सूबेदार को भी काफ़ी सराहा गया।

हिंदी और अंग्रेज़ी में समान अधिकार से लिखने वाले मधुकर उपाध्याय की तीन पुस्तकें अंग्रेज़ी और बारह हिंदी में प्रकाशित हो चुकी हैं। पत्रकारिता और साहित्य के साथ-साथ उनकी गहरी दिलचस्पी कार्टून विधा और रेखांकन में भी है।

मधुकर उपाध्याय आजकल दैनिक 'लोकमत समाचार' के प्रधान संपादक हैं।





दिये जल उठे



रास के बूढ़े बरगद ने वह दृश्य देखा था। दांडी कूच की तैयारी के सिलसिले में वल्लभभाई पटेल सात मार्च को रास पहुँचे थे। उन्हें वहाँ भाषण नहीं देना था लेकिन पटेल ने लोगों के आग्रह पर 'दो शब्द' कहना स्वीकार कर लिया। उन्होंने कहा, "भाइयो और बहनो, क्या आप सत्याग्रह के लिए तैयार हैं?" इसी बीच मजिस्ट्रेट ने निषेधाज्ञा लागू कर दी और पटेल को गिरफ्तार कर लिया गया। यह गिरफ्तारी स्थानीय कलेक्टर शिलिडी के आदेश पर हुई, जिसे पटेल ने पिछले आंदोलन के समय अहमदाबाद से भगा दिया था।

वल्लभभाई को पुलिस पहरे में बोरसद की अदालत में लाया गया जहाँ उन्होंने अपना अपराध कबूल कर लिया। जज को समझ में नहीं आ रहा था कि वह उन्हें किस धारा के तहत और कितनी सजा दे। आठ लाइन का अपना फ़ैसला लिखने में उसे डेढ़ घंटा लगा। पटेल को 500 रुपये जुर्माने के साथ तीन महीने की जेल हुई। इसके लिए उन्हें अहमदाबाद में साबरमती जेल ले जाया गया। साबरमती आश्रम में गांधी को पटेल की गिरफ्तारी, उनकी सजा और उन्हें साबरमती जेल लाए जाने की सूचना दी गई। गांधी इस गिरफ्तारी से बहुत क्षुब्ध थे। उन्होंने कहा कि अब दांडी कूच की तारीख बदल सकती है। वह अपने अभियान पर 12 मार्च से पहले ही खाना हो सकते हैं।





बरगद (वड) के पेड़ का महत्व





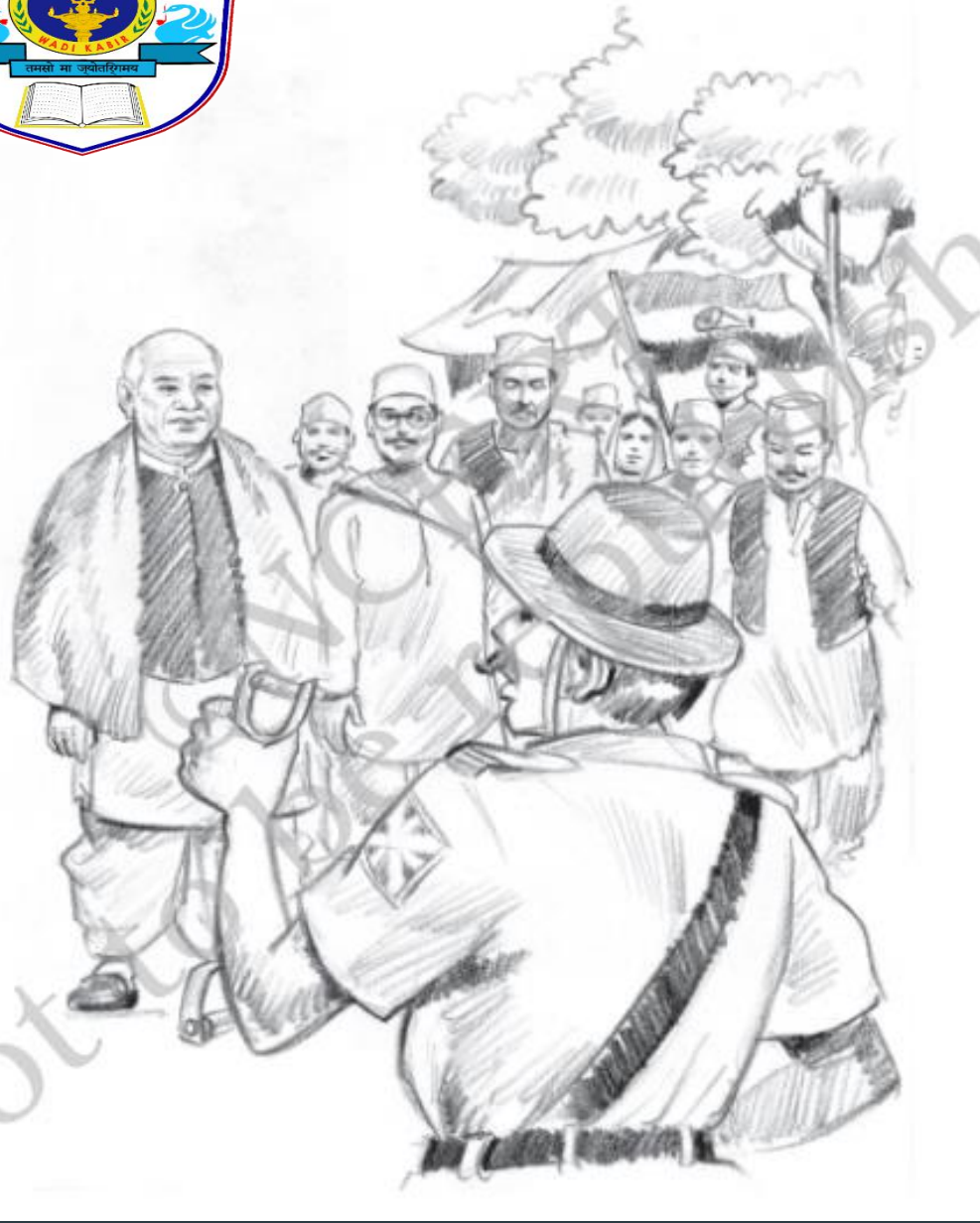


आश्रम में एक-एक आदमी यह हिसाब लगा रहा था कि मोटरकार से बोरसद से साबरमती जेल पहुँचने में कितना समय लगेगा। जेल का रास्ता आश्रम के सामने से ही होकर जाता था। आश्रमवासी पटेल की एक झलक पाना चाहते थे। समय का अनुमान लगाकर गांधी स्वयं आश्रम से बाहर निकल आए। पीछे-पीछे सब आश्रमवासी आकर सड़क के किनारे खड़े हो गए। लोगों का खयाल था कि पटेल को गिरफ्तार करके ले जाने वाली मोटर वहाँ किसी हाल में नहीं रुकेगी लेकिन मोटर रुकी। लगता है पटेल का रोब ही था कि पुलिसवालों को मोटर रोकनी पड़ी। गांधी और पटेल सड़क पर ही मिले। एक संक्षिप्त मुलाकात। पटेल ने कार में बैठते हुए आश्रमवासियों और गांधी से कहा, “मैं चलता हूँ। अब आपकी बारी है।”

पटेल की गिरफ्तारी पर देशभर में प्रतिक्रिया¹ हुई। दिल्ली में मदन मोहन मालवीय ने केंद्रीय एसेंबली में एक प्रस्ताव पेश किया जिसमें बिना मुकदमा चलाए पटेल को जेल भेजने के सरकारी कदम की भर्त्सना² की गई थी। प्रस्ताव पारित³ नहीं हो सका। इस प्रस्ताव पर कई नेताओं ने अपनी राय सदन में रखी। मोहम्मद अली जिन्ना ने कहा, “सरदार वल्लभभाई पटेल की गिरफ्तारी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के सिद्धांत पर हमला है। भारत सरकार एक ऐसी नज़ीर⁴ पेश कर रही है जिसके गंभीर परिणाम होंगे।”







गांधी के रास पहुँचने के समय वह कानून लागू था जिसके तहत पटेल को गिरफ्तार किया गया था। सत्याग्रहियों ने अपनी ओर से तैयारी पूरी कर ली थी। अब्बास तैयबजी वहाँ पहुँच चुके थे कि गांधी की गिरफ्तारी की स्थिति में कूच की अगुवाई कर सकें। बोरसद से निकलने के बाद लगभग सभी आश्वस्त थे कि अब गांधी को जलालपुर पहुँचने तक नहीं पकड़ा जाएगा लेकिन तैयारी में कोई कमी नहीं थी।

रास में गांधी का भव्य स्वागत हुआ। दरबार समुदाय के लोग इसमें सबसे आगे थे। दरबार गोपालदास और रविशंकर महाराज वहाँ मौजूद थे। गांधी ने अपने भाषण में दरबारों का खासतौर पर उल्लेख किया। कुछ दरबार रास में रहते हैं पर उनकी मुख्य बस्ती कनकापुरा और उससे सटे गाँव देवण में है। दरबार लोग



रियासतदार' होते थे। उनकी साहबी थी, ऐशो-आराम की ज़िंदगी थी, एक तरह का राजपाट था। दरबार सब कुछ छोड़कर यहाँ आकर बस गए। गांधी ने कहा, “इनसे आप त्याग और हिम्मत सीखें।”

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक 21 मार्च को साबरमती के तट पर होने वाली थी। जवाहरलाल नेहरू इस बैठक से पहले गांधी से मिलना चाहते थे। उन्होंने संदेश भिजवाया जिसके जवाब में गांधी ने रास में अपनी जनसभा से पहले एक पत्र लिखा और कहा कि उन तक पहुँचना कठिन है :

तुमको पूरी एक रात का जागरण करना पड़ेगा। अगर कल रात से पहले वापस लौटना चाहते हो तो इससे बचा भी नहीं जा सकता। मैं उस समय जहाँ भी रहूँगा, संदेशवाहक तुमको वहाँ तक ले आएगा। इस प्रयाण² की कठिनतम घड़ी में तुम मुझसे मिल रहे हो। तुमको रात के लगभग दो बजे जाने-परखे मछुआरों के कंधों पर बैठकर एक धारा पार करनी पड़ेगी। मैं राष्ट्र के प्रमुख सेवक के लिए भी प्रयाण में ज़रा भी विराम नहीं दे सकता।





वल्लभभाई की गिरफ्तारी के कारण रास में आम लोगों के बीच सरकार के खिलाफ प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी। गांधी की जनसभा से पहले ही गाँव के सभी पुश्तैनी³ मुखिया और पटेल उन्हें अपना इस्तीफ़ा सौंप गए। गांधी ने दांडी कूच शुरू होने से पहले ही यह निश्चय कर लिया था कि वह अपनी यात्रा ब्रिटिश आधिपत्य⁴ वाले भूभाग से ही करेंगे। किसी राजघराने के इलाके में नहीं जाएँगे लेकिन इस यात्रा में उन्हें थोड़ी देर के लिए बड़ौदा रियासत से गुज़रना पड़ा। ऐसा न करने पर यात्रा करीब बीस किलोमीटर लंबी हो जाती और इसका असर यात्रा कार्यक्रम पर पड़ता।

सत्याग्रही गाजे-बाजे के साथ रास में दाखिल हुए। वहाँ गांधी को एक धर्मशाला में ठहराया गया जबकि बाकी सत्याग्रही तंबुओं में रुके।

रास की आबादी करीब तीन हजार थी लेकिन उनकी जनसभा में बीस हजार से ज्यादा लोग थे। अपने भाषण में गांधी ने पटेल की गिरफ्तारी का जिक्र करते हुए कहा, “सरदार को यह सज़ा आपकी सेवा के पुरस्कार के रूप में मिली है। उन्होंने





सरकारी नौकरियों से इस्तीफ़े का उल्लेख किया और कहा कि कुछ मुखी और तलाटी 'गंदगी पर मक्खी की तरह' चिपके हुए हैं। उन्हें भी अपने निजी तुच्छ¹ स्वार्थ भूलकर इस्तीफ़ा दे देना चाहिए।" उन्होंने कहा, "आप लोग कब तक गाँवों को चूसने में अपना योगदान देते रहेंगे। सरकार ने जो लूट मचा रखी है उसकी ओर से क्या अभी तक आपकी आँखें खुली नहीं हैं?"

गांधी ने रास में भी राजद्रोह की बात पर जोर दिया और कहा कि उनकी गिरफ्तारी 'अच्छी बात' होगी। सरकार को खुली चुनौती देते हुए उन्होंने कहा :

अब फिर बादल घिर आए हैं। या कहो सही मौका सामने है। अगर सरकार मुझे गिरफ्तार करती है तो यह एक अच्छी बात है। मुझे तीन माह की सज़ा होगी तो सरकार को लज्जा आएगी। राजद्रोही को तो कालापानी, देश निकाला या फांसी की सज़ा हो सकती है। मुझ जैसे लोग अगर राजद्रोही होना अपना धर्म मानें तो उन्हें क्या सज़ा मिलनी चाहिए?



सत्याग्रही शाम छह बजे रास से चले और आठ बजे कनकापुरा पहुँचे। उस समय लोग यात्रा से कुछ थके हुए थे और कुछ थकान इस आशंका से थी कि मही नदी कब और कैसे पार करेंगे। नदी के किनारे पहुँचते ही समुद्र की ओर से आने वाली ठंडी बयार ने सत्याग्रहियों का स्वागत किया। कनकापुरा में 105 साल की एक बूढ़ी महिला ने गांधी के माथे पर तिलक लगाया और कहा, “महात्माजी, स्वराज लेकर जल्दी वापस आना।” गांधी ने कहा, “मैं स्वराज लिए बिना नहीं लौटूँगा।” गांधी की जनसभा का निर्धारित समय आठ बजे था लेकिन कनकापुरा पहुँचने में हुई देरी के कारण उसे एक घंटे के लिए स्थगित कर दिया गया।

जनसभा में गांधी ने ब्रितानी कुशासन का जिक्र किया। उन्होंने कहा, “इस राज में रंक से राजा तक सब दुखी हैं। राजे-महाराजे जैसे सरकार नचाती है, नाचने को तैयार हैं। यह राक्षसी राज है ... इसका संहार करना चाहिए।” रास्ते में रेतीली सड़कों के कारण यह प्रस्ताव किया गया कि गांधी थोड़ी यात्रा कार से



कर लें। गांधी ने इससे साफ इंकार कर दिया। उनका कहना था कि यह उनके जीवन की आखिरी यात्रा है और “ऐसी यात्रा में निकलने वाला वाहन का प्रयोग नहीं करता। यह पुरानी रीति है। धर्मयात्रा में हवाई जहाज, मोटर या बैलगाड़ी में बैठकर जाने वाले को लाभ नहीं मिलता। यात्रा में कष्ट सहें, लोगों का सुख-दुख समझें तभी सच्ची यात्रा होती है।”

ब्रिटिश हुक्मरानों¹ में एक वर्ग ऐसा भी था जिसे लग रहा था कि गांधी और उनके सत्याग्रही मही नदी के किनारे अचानक नमक बनाकर कानून तोड़ देंगे। समुद्री पानी नदी के तट पर काफ़ी नमक छोड़ जाता है जिसकी रखवाली के लिए सरकारी नमक चौकीदार रखे जाते हैं। गांधी ने भी कहा कि यहाँ नमक बनाया जा सकता है। गांधी को समझने वाले वरिष्ठ अधिकारी इस बात से सहमत नहीं थे कि गांधी कोई काम ‘अचानक और चुपके से’ करेंगे। इसके बावजूद उन्होंने नदी के तट से सारे नमक भंडार हटा दिए और उन्हें नष्ट करा दिया ताकि इसका खतरा ही न रहे।



नियमों के अनुसार उस दिन की यात्रा कनकापुरा में गांधी के भाषण के बाद समाप्त हो जानी चाहिए थी लेकिन इसमें परिवर्तन कर दिया गया। यह तय पाया गया कि नदी को आधी रात के समय समुद्र का पानी चढ़ने पर पार किया जाए ताकि कीचड़ और दलदल में कम-से-कम चलना पड़े। रात साढ़े दस बजे भोजन के बाद सत्याग्रही नदी की ओर चले। अँधेरी रात में गांधी को करीब चार किलोमीटर दलदली ज़मीन पर चलना पड़ा। कुछ लोगों ने गांधी को कंधे पर उठाने की सलाह दी पर उन्होंने मना कर दिया। कहा, “यह धर्मयात्रा है। चलकर पूरी करूँगा।” तट पर पहुँचकर गांधी ने पैर धोए और एक झोपड़ी में आराम किया। आधी रात का इंतज़ार करते हुए।

मही के तट पर उस घुप, अँधेरी रात में भी मेला-जैसा लगा हुआ था। भजन मंडलियाँ थीं। दाँडिया रास में निपुण दरबार थे। उनके गीत के बोल थे :

देखो गांधी का दाँडिया रास

देखो वल्लभ का दाँडिया रास



दांडिया रास, सरकार का नास ...

देखो विट्टल का दांडिया रास

देखो भगवान का दांडिया रास ...

गांधी को नदी पार कराने की जिम्मेदारी रघुनाथ काका को सौंपी गई थी। उन्होंने इसके लिए एक नयी नाव खरीदी और उसे लेकर कनकापुरा पहुँच गए। बदलपुर के रघुनाथ काका को सत्याग्रहियों ने निषादराज कहना शुरू कर दिया। उनके पास बदलपुर में काफ़ी ज़मीन थी और नावें भी चलती थीं। जब समुद्र का पानी चढ़ना शुरू हुआ तब तक अँधेरा इतना घना हो गया था कि छोटे-मोटे दिये उसे भेद नहीं पा रहे थे। थोड़ी ही देर में कई हजार लोग नदी तट पर पहुँच गए। उन सबके हाथों में दिये थे। यही नज़ारा नदी के दूसरी ओर भी था। पूरा गाँव और आस-पास से आए लोग दिये की रोशनी लिए गांधी और उनके सत्याग्रहियों का इंतज़ार कर रहे थे।

रात बारह बजे महिसागर नदी का किनारा भर गया। पानी चढ़ आया था। गांधी झोपड़ी से बाहर निकले और घुटनों तक पानी में चलकर नाव तक पहुँचे। 'महात्मा गांधी की जय', 'सरदार पटेल की जय' और 'जवाहरलाल नेहरू की जय' के नारों के बीच नाव खाना हुई जिसे रघुनाथ काका चला रहे थे। कुछ ही देर में नारों की आवाज़ नदी के दूसरे तट से भी आने लगी। ऐसा लगा जैसे वह नदी का किनारा नहीं बल्कि पहाड़ की घाटी हो, जहाँ प्रतिध्वनि² सुनाई दे।



रात बारह बजे महिसागर नदी का किनारा भर गया। पानी चढ़ आया था। गांधी झोपड़ी से बाहर निकले और घुटनों तक पानी में चलकर नाव तक पहुँचे। 'महात्मा गांधी की जय', 'सरदार पटेल की जय' और 'जवाहरलाल नेहरू की जय' के नारों के बीच नाव खाना हुई जिसे रघुनाथ काका चला रहे थे। कुछ ही देर में नारों की आवाज़ नदी के दूसरे तट से भी आने लगी। ऐसा लगा जैसे वह नदी का किनारा नहीं बल्कि पहाड़ की घाटी हो, जहाँ प्रतिध्वनि² सुनाई दे।

महिसागर के दूसरे तट पर भी स्थिति कोई भिन्न नहीं थी। उसी तरह का कीचड़ और दलदली ज़मीन। यह पूरी यात्रा का संभवतः सबसे कठिन हिस्सा था। डेढ़ किलोमीटर तक पानी और कीचड़ में चलकर गांधी रात एक बजे उस पार पहुँचे और सीधे विश्राम करने चले गए। गाँव के बाहर, नदी के तट पर ही उनके लिए झोपड़ी पहले ही तैयार कर दी गई थी। गांधी के पार उतरने के बाद भी तट पर दिये लेकर लोग खड़े रहे। अभी सत्याग्रहियों को भी उस पार जाना था। शायद उन्हें पता था कि रात में कुछ और लोग आएँगे जिन्हें नदी पार करानी होगी।



बोध - अभ्यास

प्रश्न 1. किस कारण से प्रेरित हो कर स्थानीय कलेक्टर ने पटेल को गिरफ्तार करने का आदेश दिया ?

प्रश्न 2. जज को पटेल की सज़ा के लिए आठ लाइन के फ़ैसले को लिखने में डेढ़ घंटा क्यों लगा ?

प्रश्न 3. “मैं चलता हूँ । अब आपकी बारी है ।” – यहाँ पटेल के कथन का आशय उद्धृत पाठ के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए ।

प्रश्न 4. “इनसे आप लोग त्याग और हिम्मत सीखें” – गांधी जी ने यह किसके लिए और किस संदर्भ में कहा ?

प्रश्न 5. पाठ द्वारा यह कैसे सिद्ध होता है कि – ‘कैसी भी कठिन परिस्थिति हो उसका सामना तात्कालिक सूझबूझ और आपसी मेलजोल से किया जा सकता है ।’ अपने शब्दों में लिखिए ।



प्रश्न 6. महिसागर नदी के दोनों किनारों पर कैसा दृश्य उपस्थित था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए ।

प्रश्न 7. 'यह धर्मयात्रा है । चलकर पूरी करूँगा ।' गांधीजी के इस कथन द्वारा उनके किस चारित्रिक गुण का परिचय प्राप्त होता है ?

प्रश्न 8. गांधीजी को समझने वाले वरिष्ठ अधिकारी इस बात से सहमत नहीं थे कि गांधी कोई काम अचानक और चुपके से करेंगे । उन्होंने किस डर से और क्या एहतियाती कदम उठाए ?

प्रश्न 9. गांधीजी के नदी पार करने के बाद भी लोग नदी तट पर क्यों खड़े रहे ?



प्रश्न – उत्तर

प्रश्न 1. किस कारण से प्रेरित हो कर स्थानीय कलेक्टर ने पटेल को गिरफ्तार करने का आदेश दिया ?

उत्तर – दांडी कूच की तैयारी के सिलसिले में वल्लभभाई पटेल 7 मार्च को रास पहुँचे थे। उन्हें वहाँ भाषण नहीं देना था लेकिन पटेल ने लोगों के आग्रह पर 'दो शब्द' कहना स्वीकार कर लिया। इस कार्य को शासन के विरुद्ध माना गया था। यही कारण था कि स्थानीय कलेक्टर शिलिडी ने पटेल को गिरफ्तार करने का आदेश दिया।

प्रश्न 2. जज को पटेल की सज़ा के लिए आठ लाइन के फ़ैसले को लिखने में डेढ़ घंटा क्यों लगा ?

उत्तर – सरदार पटेल को गिरफ्तार करके पुलिस के पहरे में ही बोरसद की अदालत में लाया गया। जज किस धारा के तहत और कितनी सज़ा सुनाएँ फैसला नहीं कर पा रहे थे क्योंकि अपराध तो कोई था ही नहीं और गिरफ्तारी बदले की भावना से हुई थी। साथ ही सरदार पटेल ने अपराध स्वयं स्वीकार कर लिया था। इसलिए उन्हें आठ लाइन के फ़ैसले को लिखने में डेढ़ घंटा लगा।



प्रश्न 3. "मैं चलता हूँ । अब आपकी बारी है ।" – यहाँ पटेल के कथन का आशय उद्धृत पाठ के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर - पटेल के कथन का आशय उद्धृत पाठ के संदर्भ में यह है कि उन्हें सरकार ने अकारण गिरफ्तार कर लिया था । तब उन्होंने कहा – मैं जानता हूँ कि मेरे जाने से यह यात्रा नहीं टलेगी । मुझे हटाया जाएगा, तो कई वल्लभभाई खड़े हो जाएँगे । उन्हें पता था गांधीजी इस आंदोलन को आगे बढ़ाएँगे । इसलिए उन्हें संबोधित करते हुए उन्होंने कहा - मैं चलता हूँ । अब आपकी बारी है ।

प्रश्न 4. "इनसे आप लोग त्याग और हिम्मत सीखें" – गांधी जी ने यह किसके लिए और किस संदर्भ में कहा ?

उत्तर - गांधीजी एक बार रास गए । वहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ । रास समुदाय के लोग इसमें सबसे आगे थे । जो दरबार कहलाते हैं, ये रियासतदार होते हैं । गोपालदास और रविशंकर महाराज जो दरबार थे, वहाँ उपस्थित थे । ये दरबार लोग अपना सब कुछ छोड़कर यहाँ आकर बस गए थे । उनका यह त्याग एवं हिम्मत सराहनीय है । गांधीजी ने इन्हीं के जीवन से प्रेरणा लेने को लोगों से कहा कि इनसे आप लोग त्याग और हिम्मत सीखें । धैर्य, त्याग और साहस के द्वारा ही अंग्रेजी शासन को बाहर खदेड़ा जा सकता है ।



प्रश्न 5. पाठ द्वारा यह कैसे सिद्ध होता है कि - 'कैसी भी कठिन परिस्थिति हो उसका सामना तात्कालिक सूझबूझ और आपसी मेलजोल से किया जा सकता है।' अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - अंग्रेजों के राज्य में उन्हीं के द्वारा बनाया नमक कानून खुलेआम तोड़ना सरल काम नहीं था। पर सत्याग्रही दृढ़ निश्चयी और सूझ - बूझ वाले थे। उन्होंने रात - दिन पैदल यात्रा की, कीचड़ और दलदल में चलकर, अँधेरी रात में नदी पार की और अंततः इन कठिनाइयों पर पार पाने में सफल रहे। इससे सिद्ध होता है कि तात्कालिक सूझबूझ और आपसी मेलजोल से कठिन परिस्थिति का सामना किया जा सकता है।



प्रश्न 6. महिसागर नदी के दोनों किनारों पर कैसा दृश्य उपस्थित था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए ।

उत्तर – रात के 12 बजे महिसागर नदी के दोनों किनारों पर हजारों लोग अपने हाथों में जलते दिये लेकर खड़े थे क्योंकि वे गांधीजी का और सत्याग्रहियों के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे । उस समय अँधेरा था । गांधीजी को भी रोशनी की आवश्यकता थी । चारों ओर 'महात्मा गाँधी की जय, सरदार पटेल की जय और जवाहर लाल नेहरू की जय' के नारे गूँज रहे थे । इन्हीं नारों के बीच गांधी जी की नाव खाना हुई । गांधीजी के नदी पार करने के बाद भी तट पर दिये लेकर लोग अन्य सत्याग्रहियों की प्रतीक्षा में खड़े रहे ।

प्रश्न 7. 'यह धर्मयात्रा है । चलकर पूरी करूँगा ।' गांधीजी के इस कथन द्वारा उनके किस चारित्रिक गुण का परिचय प्राप्त होता है ?

उत्तर - 'यह धर्मयात्रा है । चलकर पूरी करूँगा ।' गांधीजी का यह कथन उनके अटूट साहस, उत्साह और तीव्र लगन का परिचय देता है । गांधीजी धर्म यात्रा के लिए वाहनों का प्रयोग नहीं करना चाहते थे । उनके अनुसार यात्रा में कष्ट सहना पड़ता है । लोगों का दर्द समझना पड़ता है । तभी यात्रा सफल होती है । गांधीजी सत्यवादी, अहिंसाप्रिय, सदाचारी, देशभक्त, धार्मिक, विद्वान, कर्तव्यनिष्ठ, दृढ़ निश्चयी व्यक्ति थे ।



प्रश्न 8. गांधीजी को समझने वाले वरिष्ठ अधिकारी इस बात से सहमत नहीं थे कि गांधी कोई काम अचानक और चुपके से करेंगे। उन्होंने किस डर से और क्या एहतियाती कदम उठाए ?

उत्तर - सत्याग्रही स्वयं नमक बना कर कानून तोड़ना चाहते थे। गांधीजी को समझने वाले वरिष्ठ अधिकारी इस बात से सहमत नहीं थे कि गांधीजी कोई काम अचानक और चुपके से करेंगे। इसके बावजूद उन्होंने नदी के तट से सारे नमक भंडार हटा दिए और उन्हें नष्ट कर दिया ताकि इसका खतरा ही न रहे।

प्रश्न 9. गांधीजी के नदी पार करने के बाद भी लोग नदी तट पर क्यों खड़े रहे ?

उत्तर - गांधीजी के नदी पार करने के बाद भी लोग नदी तट पर दिये लेकर खड़े रहे। अभी सत्याग्रहियों को भी नदी पार जाना था। वे उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। शायद उन्हें पता था कि रात में कुछ और लोग आएँगे जिन्हें नदी पार करानी होगी।



